IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'अंजो दीदी' नाटक का वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिकता

खुशबू शोधार्थी हिन्दी विभाग (दिल्ली विश्वविधालय)

सारांश

कोई भी साहित्यकार समाज और समाज में घटने वाली घटनाओं से प्रभावित होकर ही रचना करता है सामाजिक अनुभव ही किसी भी रचना के मूल में होती है इसलिए किसी भी रचना का निर्माण यर्थात की भूमि मे रह कर ही किया जाता है परंतु किसी भी रचना की एक खासियत और भी होती है कि सम्पूर्ण रचना का निर्माण यर्थात की भूमि मे रह कर नहीं किया जा सकता है, किसी भी साहित्यिक कृति को लिखने का मूल कारण सामाजिक हो सकता है लेकिन उस कृति को लिखने के सामाजिक उदेश्य को पूरा करने में कल्पना तत्व और मनोविज्ञान का सहारा लिए बिना कोई भी रचना संपूर्णता के धरातल पर खड़ी नहीं उतर पाती है| महान रचना वही होती है जो रचना अपने युग का प्रतिनिधित्व करे और अपने सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित हो, रचना का उदेश्य तभी पूरा होता है जब वह रचना अपने युग का पथ-पदर्शन करें| उपेंद्रनाथ अश्क भी ऐसे ही महान रचनाकार है जिसने अपने युग के प्रभाव को अपनी रचनाओं मे स्थान दिया| अश्क हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण स्तम्भ, अपने यर्थातवादी चित्रण और सामाजिक मुद्दों पर गहन चिंतन के लिए जाने जाते हैं|

'अंजो दीदी' नाटक में पारिवारिक विघटन, और पारिवारिक समस्याओं को उजागर किया गया है सम्पूर्ण नाटक में मनोवैज्ञानिक परिपेक्ष्य को दर्शाया गया है इस नाटक की नायिका जो की 'अंजो दीदी' ही नाटक की प्रमुख पात्र है| नाटक की सम्पूर्ण घटनाएँ अंजो दीदी के इर्द-गिर्द में ही घटती है| अंजो के बचपन के अनुभव और दमित भावनाएँ उसके वर्तमान व्यवहार को प्रभावित करती है साथ ही वह स्वयं भी अपने अचेतन मन के संघर्षों से जूझते हुए दिखाई देती है| नियबद्धता भारतीय दर्शन की पहचान है नियमबद्ध होकर ही व्यक्ति अपने जीवन के लक्ष्यों के प्रति जागरूक हो सकता है और ये बात सच भी है, परंतु एक कहावत भी है की किसी भी चीज़ की अति साधारण मनुष्य के लिए सही नहीं होता है अति माने सनक और सनक मनुष्य को मानसिक रूप से बीमार कर देती है जिसका प्रभाव न सिर्फ उस व्यक्ति के अपने जीवन को नष्ट करती है बल्कि दीमक की तरह वो उसके घर परिवार को भी नष्ट करने लगती है| अंजो दीदी नाटक की कथा अभिजात्त वर्ग (उच्च वर्ग) से संबन्धित है|

कूट शब्द : भारतीय मध्यवर्गीय जीवन, पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक जीवन का संघर्ष, पारिवारिक मूल्यों का महत्व, मानवीय भावनाएँ और मनोविश्लेषण, महिलाओं का परिवार में योगदान|

प्रस्तावना

अंजो दीदी का पालन पोषण उनके नाना जी के परिवार में हुआ था बचपन से ही वो अपने नाना जी कि साया मे पली बड़ी है इसलिए ज़हीर सी बात है की उनकी देखभाल उनकी शिक्षा और उनके विचारों पर उनके नाना जी का ही प्रभाव था| शादी उनकी इंद्रनारायण वकील से होती है जो की शादी से पहले एक फक्कड़ व्यक्ति थे नियंबद्धता उनकी जीवन शैली का अहम हिस्सा नही था ,परंतु अंजो से विवाह के बाद उनको अपने नियमों के हिसाब से चलाती है ना सिर्फ उनको बल्कि पूरे घर को वो अपनी नियंबद्धता में जकड़ लेती है| घर के नौकर से लेकर ग्यारह वर्ष का उसका बेटा भी खेलने-कूदने की उम्र में बूढो सी नियंबद्धता मे चलता है| नियम से चलना समय का सदुपयोग करना अच्छी बात है परंतु अपनी बनाई हुई जीवन शैली मे सबको अपने अनुकूल परिस्थितियों में ढालना सही नहीं होता है हर व्यक्ति का अपना एक सुविधा क्षेत्र होता है और व्यक्ति अपनी सुविधा अनुसार किसी भी कार्य को सही ढंग से करता है| इस नाटक के केंद्र मे जो मुख्य पात्र है अंजो दीदी वो चाहती है सारा संसार उनकी बनाई दुनिया के हिसाब से ही चले| बच्चों को अच्छे संस्कार देना माँ बाप का कर्तव्य होता है पर साथ ही माँ बाप का यह भी कर्तव्य होता है वो अपने बच्चों की मन की इक्षाओं को समझे ना कि सिर्फ अपनी इक्षाओं को पूरा करने की मशीन अपनी संतान को समझे कि जैसा जब वो चाहते है बच्चा मशीन की भाति बस चलता जाए पर उस मशीन की चाबी माँ बाप अपने हाथ में रखे| ऐसी परिस्थिति में पारिवारिक संतुलन बिगड़ जाता है और मानसिक संतुलन भी सही नहीं रहता है| 'अंजो दीदी' नाटक वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है क्योंकि यह मानवीय भावनाओं, रिश्तों और सामाजिक मुद्दों को उजागर करता है जो आज भी हमारे समाज में प्रासंगिक हैं| यह नाटक हमें अपने परिवार, समाज और खुद के बारे में सोचने पर मजबूर करता है|

'अंजो दीदी' नाटक का प्रथम अंक प्रारम्भ प्रातः काल 8 बजे से होता है जहां अंजो की सहेली अनीमा गर्मियों की छुट्टी काटने उसके घर आई है और अंजो रसोईघर के दरवाजे पर खड़ी होकर अपने नौकरों से कह रही है सुबह के 8 बज गए है नास्ते का कहीं अता पता नहीं है तुम लोग करते क्या हो अंजो अपने घर के नौकरों को न सिर्फ बोल रही है बल्कि उनको फटकार भी रही है फिर अपने बेटे को कहती है कपड़े बदल लिए तो आ कर नास्ता करो 8 बज गए है फिर अपने पति से भी कहती है तुम अभी तक नहाये नहीं 8 बज गए अंजो घर के सभी सदस्यों को 8 बजे की याद दिलाती है उसकी सहेली अनीमा उसके घर की नियंबद्धता को देख कर उसकी तारीफ करती है तब अंजो दीदी उत्तर देती है की – इस घर के कण – कण को मैंने सलीका, समय की पाबंदी और सभ्य लोगों के रंग-ढंग सिखाएँ है तुम पहले आकार देखती तो यह घर भूतों का डेरा था यहाँ तक की अंजो ने न सिर्फ घर के लोगों को सलीका रहने का ढंग सिखाया था बल्कि घर के नौकरों को भी ऐसे रखती थी की सामने वाला एक बार को अंतर ही न कर पाये की कौन नौकर है कौन घर ही का सदस्य है| अंजो की हर बात में दो बातों का जिक्र होता है

पहली बात – नाना जी कहा करते थे और दूसरी बात में- घड़ी का समय | वो चाहती थी इन सब की तरह उसका ग्यारह साल का बेटा भी साफ सफाई पसंद करे सभ्य और सलीके से व्यवहार करे|

ग्यारह साल का नीरज जो सुबह समय से उठता है, अपने पापा के साथ सैर पर जाता है, समय से नहाता है, समय से नास्ता करता है, समय से खेलता और पढ़ता भी है, यहाँ तक की काम और आराम के समय का भी उसे उचित ज्ञान रहता है इतनी दृढ़ता से वह अपने कार्य करता है जितनी दृठता सत्तर साल के एक बूढ़े व्यक्ति में होती है| अंजो नीरज को डिप्टी कमिश्नर बनाना चाहती है और नीरज क्रिकेट का कप्तान बनना चाहता है| नाटक में एक और अहम पात्र है अंजो का भाई श्रीपत जो अंजो के चरित्र के बिलकुल विपरीत कार्य करने वाला मस्त मौला व्यक्ति आधुनिकता का पात्र है श्रीपत

का किरदार नाटक में एक जटिल और बहुआयामी चरित्र है वह नाटक में संघर्ष, सामाजिक व्यंग और कहानी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है|

सम्पूर्ण नाटक दो अंकों में विभाजित है दोनों अंकों में दो पीढ़ियों के मानसिक अंतर्द्वंद को दिखाया गया है केवल नाटक के पात्र बदलते है घटनाएँ नहीं बदलती है बल्कि पहली पीढ़ी दूसरी पीढ़ी पर भी अपनी छाप छोड़ जाती है, नाटक के दोनों अंकों मे समान घटनाएँ घटती है| दूसरे अंक में अंजो की बहू ओमी का वर्णन है जो ठीक अंजो की परछाई है उसका शरीर उसका है पर उसकी रूह अंजो का है| बीस वर्ष बाद उसी खाने के मिले-जुले कमरे मे पर्दा उठता है, बीस वर्ष बाद पर्दे, सोफ़े, तकियों के गिलाफ़ बदले है, लेकिन कमरों की साफ-सफाई और सजावट में कुछ खास अंतर नहीं आया था| कमरे से ओमी तेज़-तेज़ आती है- बिलकुल अंजो दीदी की तरह और रसोईघर के दरवाजे पर नौकरानी को आवाज देकर ठीक वोहि बाते दोहराती है जो अंजो कहा करती थी- मुन्नी नास्ता रखो मेज़ पर तुम कब से क्या कर रही हो आठ बजने वाला है और नास्ते का कहीं अता-पता नहीं है| जिस प्रकार अंजो की जुबान पर हमेशा दो बाते होती थी उसकी बहू ओमी भी हमेशा दो बातों का जिक्र करती है| पहली बात- ममी जी कहा करती थी और दूसरी बात- आठ बज गए|

नीरज श्रीपत का अपूर्ण सपना| और नीरज का पुत्र नीलू उस सपने की संभावित परिणाम है| दूसरे अंक में नीरज और ओमी का पुत्र नीलू (नीलम) जिसे उसकी माँ आ ई एस बनाना चाहती है और पिता क्रिकेट का कप्तान और वह स्वयम कवि बनना चाहता है| नीरज अपने बचपन की बातों को याद करते हुआ कहता है की ना तो मेरा मन पढ़ाई में लगता था और न खेल-कूद में क्योंकि उसका सपना कुछ बनने का था और उस पर दबाव कुछ और का था, इस बीच ना तो नीरज क्रिकेट कप्तान बन पाया और ना ही आई एस बन पाया| नीरज और ओमी उसी घटना को दोहरने को मजबूर है जो उनके साथ भी घटी है जिसका शिकार अब नीलू है| नीलू उन्ही परिस्थितियों का सामना कर रहा है जिसका सामना एक समय पहले उसके पिता ने भी किए थे|

'अंजो दीदी' नाटक की सबसे दिलचस्प और जटिल घटना अंजो की मौत है, जिसके पीछे कई कारण है| ये कारण नाटक के दौरान धीरे-धीरे उभरकर सामने आते हैं| अत्यधिक अपेक्षाएँ, सामाजिक दबाव, असफलता का डर, एकलौता बेटा, पति का शराब पीना, उसकी मान्यताओं का टूटना, जिस समय यह नाटक लिखा गया था उस समय ऐसी स्त्रियाँ को आदर्श माना जाता हैं जो अपनी संतान को सफल बनाती है, अपने घर परिवार को अनुशासन में रखती है| अंजो अपने एकलौते बेटे नीरज से अत्यधिक प्रेम करती है साथ ही उससे अत्यधिक अपेक्षाएँ भी रखती है, वह चाहती है नीरज एक सफल अधिकारी बने और समाज में उनका नाम रौशन करे| ये अपेक्षाएँ इतनी अधिक हो जाती है कि वह नीरज के व्यक्तिगत स्वभाव और उसकी स्वतन्त्रता को कुचलने लगती हैं| अंजो समाज में भी एक सम्मानित महिला बनना चाहती है और अपने बेटे की सफलता से इस सम्मान को और अधिक बढ़ाना चाहती है| जब नीरज उसकी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पाता है तो अंजो को असफलता का डर सताने लगता है| उसे लगता है समाज में उसका मान सम्मान खत्म हो जाएगा| साथ ही उसके भाई के साथ रह कर उसके पति इंद्रनारायण भी शराब पीने लगता है तब उसे लगता है उसके अपने ही पति और बेटे ने उसकी बनाई मर्यादा को तोड़ दिया| कुछ लोगों का अहम इतना हावी इतना हठी होता है की वो अपने अहम को जीतता हुआ देखने के लिए अपने जीवन की भी बली चढ़ाने से नहीं कतराते उनको लगता है जो काम वो जीते जी नहीं कर पाये उसे खुद को मार कर भी पूरा करने को तैयार हो जाते है अंजो का व्यक्तित्व भी इतना ही हठी किसम का है दूसरों को घड़ी की सुईयों के हिसाब से चलाने की जिद्द में वह स्वयम के जीवन की घड़ी की सुईया सदा के लिए बंद कर देती है सिर्फ इसलिए ताकि इंद्रनारायण जिंदगी भर खुद को दोसी माने उस गुनाह के लिए जो शायद उन्होने किए ही नहीं और होता भी ऐसा ही है इंद्रनारायण अंजो की मौत का जिम्मेदार स्वयम को मानते हैं उन्हे ये भी नहीं पता चलता है की अंजो की मौत भी कोई आम मौत नहीं बल्कि अंजो अपनी जिद्द की पूर्ति के लिए अपने हाथों अपने जीवन की सुईयों को रोक देती हैं|

निष्कर्ष

यह नाटक उस समय लिखा गया था जब भारतीय समाज में कई बदलाव हो रहे थे और पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक जीवन के बीच संघर्ष चल रहा था| नाटक में 'अंजो दीदी' के माध्यम से पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक जीवन के बीच के टकराव को दिखाया गया हैं| यह टकराव आज भी कई परिवारों में देखने को मिलता है, खासकर जहां पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक सोच के बीच संघर्ष होता है| नाटक में पारिवारिक सम्बन्धों की जटिलता को बड़ी बारीकी से दिखाया गया है| माता-पिता और बच्चों के बीच,पति-पत्नी के बीच और भाई- बहनों के बीच के रिश्तों को नाटक में गहराई से चित्रित किया गया है| ये संबंध आज के समय में भी उतने ही जटिल हैं|

संदर्भ सूची

1 अंजो दीदी नाटक, उपेन्द्रनाथ अश्क, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद , पृष्ठ संख्या 28, वर्ष 1955

2 अश्क – एक संक्षिप्त जीवन चरित्र – नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद

3 नाटककार अश्क, जगदीश चन्द्र माथुर, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद